आँगनवाड़ियों को पुनः खोलना | शिक्षकों को क्या करना चाहिए

योगेश जी आर

महामारी के कारण आँगनवाड़ी केन्द्र मार्च 2020 से बन्द हैं। लगभग दो वर्षों से आँगनवाड़ी जाने वाले बच्चे पोषण और सुरक्षित वातावरण के साथ-साथ सीखने के अनुभवों से भी वंचित हैं। बहुत-से बच्चे आँगनवाड़ी गए बिना ही सीधे प्राथमिक कक्षा में प्रवेश लेंगे। वर्तमान में ऐसे बहुत-से बच्चे या तो अपने माता-पिता के साथ उनके काम में हाथ बँटाने जाते हैं (मुख्यतः खेती का काम) या उनके दादा-दादी की देखभाल में छोड़ दिए जाते हैं।

छोटे बच्चों पर तालाबन्दी का असर

मस्तिष्क के विकास पर असर

बच्चे के शुरुआती वर्ष (0 से लेकर 8 वर्ष) वृद्धि और विकास के वर्ष होते हैं। मस्तिष्क में तंत्रिका कोशिकाओं (न्यूरॉन) के बीच सम्पर्क बहुत तीव्र गति से बनते हैं। यदि इन शुरुआती वर्षों में बच्चों को अच्छा मनो-सामाजिक प्रेरक वातावरण मिलता है तो यह क्रिया और भी विस्तृत ढंग से होती है। शुरुआती बचपन में बच्चों के मस्तिष्क के परिपथ की परिपक्वता और मज़बूती उनके सम्पूर्ण विकास में योगदान देती है। बच्चों को ऐसे अनुभवों की आवश्यकता होती है जो उनके विकास के सभी क्षेत्रों में वृद्धि को बेहतर करें, जैसे शारीरिक/पेशीय, भाषागत, संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक और सृजनात्मक। इसलिए यह अत्यावश्यक है कि दीर्घकालिक लाभ हेतु उनके विकास और सीखने के लिए इस अवधि का पूरा-पूरा उपयोग किया जाए।

तालाबन्दी के दौरान और उसके बाद भी आँगनवाड़ियों को बन्द रखने का नतीजा यह रहा कि बच्चे शिक्षकों और अपने साथियों के साथ व्यवस्थित जुड़ाव के अवसर से वंचित रहे और ऐसी गतिविधियों/ कार्यों से वंचित रहे जो गुणवत्तापूर्ण जुड़ाव को सम्भव बनाते हैं जिसके परिणामस्वरूप बेहतर शैक्षिक और सामाजिक विकास होता है, ख़ासकर असुरक्षित घरेलू वातावरण में रहने वाले बच्चों का। स्कूल-पूर्व समय में बच्चों के भीतर ध्यान लगाने, भावनाओं को सम्भालने और व्यवहार को नियंत्रित करने की क्षमता का अच्छा-ख़ासा विकास होता है। इस समय का बेकार जाना बच्चों की स्कूली तैयारी के लिए आवश्यक कौशलों के विकास पर उलट प्रभाव डालता है। इन बच्चों को सीखने के अवसरों से वंचित रखना सामाजिक खाई को और भी चौड़ा करता है।

पोषण पर प्रभाव

एकीकृत बाल विकास सेवा (आईसीडीएस) योजना के तहत आँगनवाड़ी बच्चों को प्रतिदिन गर्मा-गर्म मध्याह्न भोजन दिया जाता था। कई बच्चों के लिए सिर्फ़ यही सम्भवतः पूरे दिन में मिलने वाला पौष्टिक भोजन होता था। कुछ राज्यों में इसमें अण्डा, दूध और फोर्टिफाइड नाश्ता पूरक के तौर पर दिया जाता था। लॉकडाउन के दौरान मध्याह्न भोजन (एमडीएम) योजना बाधित हो गई और इससे बच्चों के समग्र पोषण स्तर पर असर पड़ा है। मध्याह्न भोजन की जगह आँगनवाड़ी शिक्षकों द्वारा घरों में मासिक राशन (टेक-होम राशन) पहुँचाया गया। लेकिन कुछ जगहों पर राशन नियमित नहीं पहुँच रहा था। और जहाँ यह पहुँच भी रहा था वहाँ कम मात्रा में पहुँच रहा था।

चूँकि तालाबन्दी के कारण अविभावकों की आजीविका प्रभावित हुई थी, इसलिए यह मानना ग़लत नहीं होगा कि बच्चों के लिए दिया जा रहा राशन उनके परिवार के बीच बँट रहा होगा। दिन में बच्चे को जो अण्डा मिलना चाहिए था, वह सम्भवतः अण्डा करी बनकर उसके परिवार के बीच बँटा होगा। आमतौर पर बच्चों को घर में दिन में दो बार भोजन मिलता है और कभी-कभी कुछ नमकीन बिस्कुटों के साथ एक कप चाय भी मिल जाती है। आमतौर पर नाश्ते की बजाय थोड़ी देरी से सीधे भोजन किया जाता है, जिसमें पिछले दिन के बचे हुए भात में पानी और नमक मिलाकर अचार के साथ खाया जाता है; या फिर मिर्च पाउडर, इमली के रस और नमक से बनी तरी के साथ भात खाया जाता है। कभी-कभी, भात या रोटियाँ उबली दाल, नमक और कुछ स्थानीय सब्ज़ियों के साथ खाई जाती हैं। अधिकतर, रात के खाने में भी यही होता है।

सन 2016-18[i] का व्यापक राष्ट्रीय पोषण सर्वेक्षण बताता है कि प्री-स्कूल में लगभग 35 प्रतिशत बच्चे नाटे थे; 17 प्रतिशत कमज़ोर थे; 33 प्रतिशत बच्चे कम वज़न के थे और 11 प्रतिशत अत्यधिक कुपोषित थे। आँगनवाड़ी बन्द होने ने इस स्थिति को और भी ख़राब कर दिया है और बच्चों की एक पूरी पीढ़ी पर दीर्घकालिक प्रभाव डाला है।

खोए हुए अवसर और शिक्षकों को क्या करना चाहिए

आमतौर पर ढाई साल से अधिक उम्र के बच्चों को आँगनवाड़ी में दाख़िल किया जाता है। इनमें से अधिकांश दाख़िले साल की शुरुआत में होते हैं। एक साल में एक आँगनवाड़ी में लगभग 30-40 प्रतिशत नए बच्चे होते हैं, 30-40 प्रतिशत बच्चे ऐसे होते हैं जो डेढ़ साल से कम समय से आँगनवाड़ी आ रहे होते हैं, अन्य 20-30 प्रतिशत बच्चे आँगनवाड़ी में डेढ़ साल से अधिक समय से आ रहे होते हैं। आँगनवाड़ी शिक्षक बच्चों के इस बहु-आयु वर्ग को सम्भालने के अनुभवी होते हैं। अब इस आयु वर्ग के सभी बच्चे, जो लगभग दो साल से आँगनवाड़ी नहीं आए हैं, उनके अनुभव के हिसाब से समान स्तर पर होंगे। आँगनवाड़ी केन्द्र खुलने के बाद शिक्षक प्रतिदिन बच्चों के साथ बुनियादी गतिविधियाँ करके शुरुआत कर सकते हैं।

शिक्षकों को महीने-वार पाठ्यक्रम को पूरा कराने की बजाय बच्चों का आँगनवाड़ी आना सहज बनाने पर ध्यान देना चाहिए। फिर शिक्षक बच्चों को सरल और सार्थक गीतों, कहानियों, अन्दर और बाहर खेले जाने वाले खेलों और चित्र बनाने की गतिविधियों में जोड़ सकते हैं। शुरुआती चार से छह महीनों के लिए सभी आयु वर्ग के बच्चों के साथ एक सामान गतिविधियाँ की जा सकती हैं। इसके बाद शिक्षक धीरे-धीरे आयु-वार अतिरिक्त गतिविधियाँ/ कार्य कराने की ओर बढ़ सकते हैं।

इसके अलावा, शिक्षकों को बच्चों के साथ मैत्रीपूर्ण बातचीत करनी चाहिए और बच्चों को यह बताने का अवसर देना चाहिए कि वे क्या और कैसा महसूस कर रहे हैं। शिक्षकों को ज़रूरत है कि वे बच्चों को उनकी चिन्ताएँ साझा करने, सवाल करने, *कोविड-19* से सम्बन्धित अपने डर और भावनाओं को व्यक्त करने और अपने परिवारों और आस-पड़ोस में अनुभव किए गए इसके प्रभावों को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें।

सफ़ाई और शारीरिक स्वास्थ्य को लेकर ख़ास ध्यान दिए जाने की ज़रूरत है। इसके लिए बच्चों में स्वच्छता की अच्छी आदतों को बढ़ावा देने पर ध्यान देना होगा, जैसे खाँसते और छींकते समय मुँह और नाक को ढँकना, बार-बार हाथ धोना और नाक, आँख और मुँह को छूने से बचना।

समूह-1 : तीन से चार वर्ष के बीच के बच्चे

इन्होंने क्या खोया : ये वे बच्चे हैं जो आँगनवाड़ी बिल्कुल भी नहीं गए होंगे। उन्हें आँगनवाड़ी में अपने हमउम्र या अपने से थोड़े बड़े बच्चों के साथ जुड़ने का अवसर नहीं मिला, साथ-ही-साथ उन्होंने आयु-उपयुक्त पाठ्यचर्या के तहत सीखने का अवसर भी खोया। हालाँकि, उनके पास अभी भी 4+ आयु वर्ग के साथ आँगनवाड़ी में छह-आठ महीने बिताने के लिए हो सकते हैं।

शिक्षक क्या कर सकते हैं : ये बच्चे कभी आँगनवाड़ी नहीं आए होंगे, इसलिए पहले उन्हें आँगनवाड़ी केन्द्र से परिचित कराने की आवश्यकता है और शिक्षक द्वारा उनमें बुनियादी स्वच्छता सम्बन्धी आदतें डालने पर ध्यान दिया जा सकता है। एक बार जब बच्चे आँगनवाड़ी के वातावरण के आदी हो जाएँ, तब शिक्षक को बच्चों के साथ बुनियादी बातचीत, कहानी, कविता और खेल पर अच्छा-ख़ासा समय (दो से ढाई घण्टे) बिताने की ज़रूरत होगी।

समूह-2 : चार से पाँच वर्ष के बच्चे

इन्होंने क्या खोया : चार से पाँच साल के बच्चों ने 2019 के मध्य या 2020 की शुरुआत में आँगनवाड़ी में आना शुरु किया होगा और छह से नौ महीने आँगनवाड़ी में बिताए होंगे। उन्होंने आँगनवाड़ी में अपने हमउम्र या अपने से थोड़े बड़े बच्चों के साथ जुड़ने का अवसर खोया होगा और अपनी आयु-उपयुक्त पाठ्यचर्या, ख़ासकर संख्यात्मकता-पूर्व और साक्षरता-पूर्व की अवधारणाओं से जुड़ने का अवसर खोया होगा।

शिक्षक क्या कर सकते हैं : समूह-1 की तरह के काम इन बच्चों के साथ करने के अलावा शिक्षक छह महीनों के बाद इस समूह के बच्चों के साथ संख्यात्मकता-पूर्व और साक्षरता-

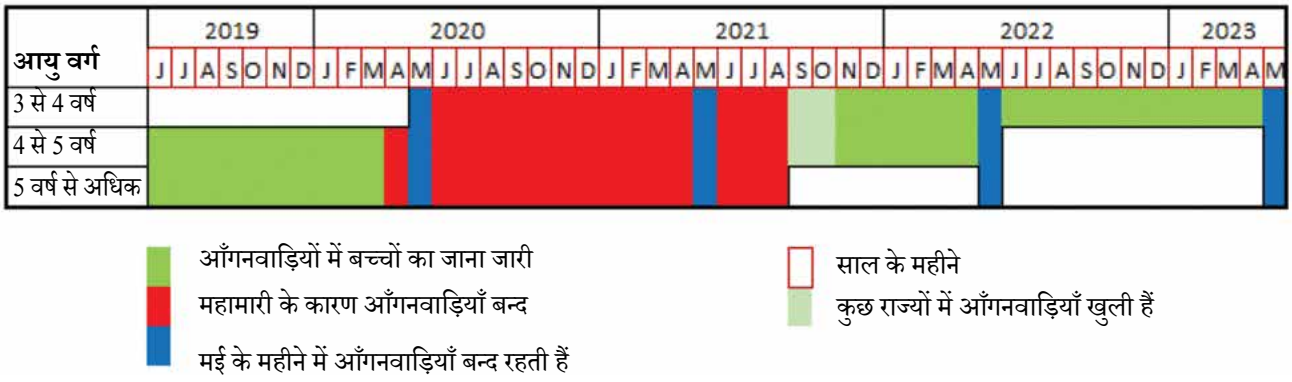

पूर्व की अवधारणाओं पर अधिक ध्यान देना शुरू कर सकते हैं ताकि ये बच्चे स्कूल जाने के लिए तैयार हो सकें।

समूह-3 : पाँच से अधिक उम्र के बच्चे

इन्होंने क्या खोया : इस आयु वर्ग के बच्चों ने तालाबन्दी के पहले छह से नौ महीने तक बुनियादी अवधारणाएँ पढ़ी होंगी। उन्होंने न केवल विभिन्न क्षेत्रों में विकास के अवसरों का एक बड़ा हिस्सा खोया, बल्कि संख्यात्मकता-पूर्व और साक्षरता-पूर्व की अवधारणाओं से भी अवगत होने का अवसर खोया जो प्राथमिक कक्षाओं में प्रवेश के लिए महत्त्वपूर्ण है।

शिक्षक क्या कर सकते हैं : ये बच्चे सीधे प्राथमिक स्कूल (पहली कक्षा) में प्रवेश लेंगे, इसलिए प्राथमिक कक्षा के शिक्षक को पहली कक्षा का पाठ्यक्रम शुरू करने से पहले तीन से छह महीनों तक स्कूल की तैयारी वाली गतिविधियाँ करानी चाहिए। स्कूल शुरू होने तक ये बच्चे आँगनवाड़ी गतिविधियों का हिस्सा हो सकते हैं।

आँगनवाड़ियों के बन्द होने के कारण उचित पोषण में हुई कमी से उबरने के लिए आँगनवाड़ियों के दोबारा खुलने के छह महीनों तक अतिरिक्त पूरक भोजन जैसे अतिरिक्त अण्डे, फोर्टिफाइड दूध और नाश्ता देने की योजना बनाई जा सकती है।

पुन: शुरुआत अभी करें

उच्चतर माध्यमिक, उच्च प्राथमिक या प्राथमिक स्कूलों के खुलने से पहले आँगनवाड़ी केन्द्रों को प्राथमिकता के आधार पर खोलना चाहिए, क्योंकि इन सभी में से आँगनवाड़ी केन्द्र सबसे अधिक स्थानीय हैं। किसी विशिष्ट आँगनवाड़ी को खोलने या बन्द करने का निर्णय राज्य स्तर की परिस्थितियों की बजाय स्थानीय परिस्थितियों के आधार पर ग्राम पंचायत स्तर पर लिया जाना चाहिए। बड़ी संख्या में ऐसे गाँव हैं जो पिछले छह माह से *कोविड-19* मुक्त हैं और यहाँ आँगनवाड़ियाँ खोली जा सकती थीं।

एक आँगनवाड़ी शिक्षिका ने बताया कि गाँवों में ज़्यादातर बच्चे वैसे भी अपनी गलियों में एक-दूसरे के साथ खेल रहे हैं। उन्होंने सवाल किया कि आँगनवाड़ी केन्द्र में खेलना और सीखना इससे ज़्यादा जोखिम भरा कैसे हो सकता है। शिक्षिका ने यह भी बताया कि चूँकि माता-पिता दोनों खेतों में काम करने जाते हैं, इसलिए वे बच्चों को खेतों में अपने साथ ले जाने और उनका धूप-बारिश से सामना कराने या फिर दादा-दादी के पास घर पर छोड़ने की बजाय आँगनवाड़ी में छोड़ने के लिए सहर्ष तैयार हैं। शहरी या अर्ध-शहरी क्षेत्रों में आँगनवाड़ी खुलना और भी आवश्यक हो जाता है क्योंकि महिलाएँ या तो दिहाड़ी मज़दूर हैं या घरेलू बाई का काम करती हैं और उनके पास घर पर बच्चों की देखभाल के लिए कोई सहायक नहीं होता। फिलहाल इन बच्चों को बड़े बच्चों की देखरेख में छोड़ दिया जाता है।

ग्राम पंचायतों के लिए टीकाकरण में तेज़ी लाने और अपने गाँवों में 70 प्रतिशत टीकाकरण का लक्ष्य हासिल करने को अनिवार्य किया जाना चाहिए। इसके बाद इन गाँवों में आँगनवाड़ी केन्द्रों का संचालन शुरू किया जाना चाहिए।

आँगनवाड़ियों को दोबारा खोलने से पहले शिक्षकों को ये कुछ बुनियादी तैयारियाँ करनी चाहिए :

1. चूँकि आँगनवाड़ियों का लम्बे समय से उपयोग नहीं हुआ है और कुछ स्थानों पर इनका उपयोग वितरण के राशन का भण्डारण करने के लिए किया जा रहा था इसलिए यह सुनिश्चित किया जाए कि आँगनवाड़ी बहुत अच्छे से साफ़ की गई हो।
2. खिड़कियों और दरवाज़ों को खुला रखकर कमरों को हवादार रखें।
3. खेलने और सीखने की सभी सामग्रियों को सैनिटाइज़/साफ़ करें।
4. स्वच्छता की आदतों के बारे में समुदाय में जागरूकता लाएँ।
5. यदि दाख़िलों की संख्या अधिक है तो शिक्षक बच्चों को दो समूहों में बाँट सकते हैं और दोनों समूहों को बारी-बारी अन्दर और बाहर की जाने वाली गतिविधियाँ करा सकते हैं। हालाँकि, सभी गतिविधियाँ बाहर कराए जाने को प्राथमिकता दी जानी चाहिए यदि इसके लिए स्थान उपलब्ध है तो।
6. आँगनवाड़ी में अन्य सेवाओं का लाभ लेने आने वाले अन्य सभी लाभार्थियों, जैसे गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं, को बच्चों से अलग रखें।

आँगनवाड़ी शिक्षकों का क्षमता-वर्धन

कार्यशालाओं में भाग लेने वाले कई शिक्षकों ने महसूस किया कि उनके शिक्षण कार्य में एक बड़ा अन्तराल रहा है, जिसके कारण शिक्षण दक्षताओं में उनका अपना विकास पीछे चला गया है। कुछ आँगनवाड़ी शिक्षक राशन वितरण के लिए बच्चों के घर जाने के समय बच्चों के साथ गतिविधियाँ करते रहे हैं। आँगनवाड़ी शिक्षकों को विभिन्न तरीक़ों से ईसीई (प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा) के कार्यों से फिर से जोड़ना बहुत ज़रूरी है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे अपना काम दोबारा सुचारु रूप से कर सकें। ये तरीक़े हो सकते हैं — हमारी कार्यशालाओं की शृंखला, खण्ड और परियोजना

स्तर की बैठकें तथा आँगनवाड़ी केन्द्रों पर उनके लिए मदद। शिक्षकों के साथ किए जाने वाले कार्यों का उद्देश्य पाठ्यचर्या गतिविधियों का अभ्यास होना चाहिए।

कार्यशालाओं के सत्रों में बुनियादी और उपयुक्त गतिविधियों जैसे स्वच्छता की अच्छी आदतों, गीतों, कहानियों, नाटकों और रचनात्मक गतिविधियों पर प्राथमिकता के आधार पर ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक है। शिक्षकों के लिए ज़रूरी है कि वे बच्चों के साथ अपने जुड़ावों में अधिक केन्द्र-आधारित सहयोग देने के लिए तैयार रहें।

Endnotes

i Comprehensive National Nutrition Survey 2016-18 conducted by the Union Health Ministry.

References

Ministry of Health and Family Welfare (2019). Comprehensive National Nutrition Survey (2016-2018) Reports. New Delhi. Government of India.

Early Childhood Education Initiative Sangareddy. (2021). ECE focus in phase 2. Sangareddy. Azim Premji Foundation.

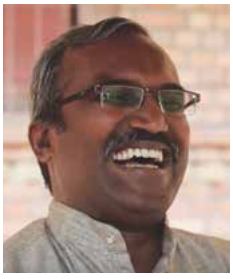

योगेश जी आर संगारेड्डी, तेलंगाना में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन की प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) पहल का संचालन करते हैं। उन्होंने ईसीई में स्रोत व्यक्तियों की एक टीम का मार्गदर्शन करने में और आँगनवाड़ी शिक्षकों के क्षमता-वर्धन के लिए एक मापनीय बहु-विध जुड़ाव का तरीक़ा विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके पूर्व उन्होंने फ़ाउण्डेशन के पुडुचेरी ज़िला संस्थान में प्राथमिक और उच्च प्राथमिक शिक्षकों के क्षमता-वर्धन के लिए काम किया था। वे 22 से अधिक वर्षों से शिक्षा, आईटी और प्रबन्धन के क्षेत्रों में विभिन्न क्षमताओं में काम कर रहे हैं। उनसे yogesh.r@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** प्रतिका गुप्ता